आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 26-09-14

हम आत्माओं को सत्य ज्ञान और योग सिखलाकर राजयोगी बनाने वाले, परमात्मा शिव बाबा ने कहा, मीठे बच्चे - तुम्हारा काम है अपने आपसे बातें कर पावन बनना, दूसरी आत्माओं के चिंतन में अपना टाइम वेस्ट मत करो.

बाबा ने हम बच्चों को आत्मा का, परमात्मा का और इस सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का सारा ज्ञान दिया हैं. आत्मा कहा रहती है? कैसे पार्ट बजाने आती है? आत्मा कैसे पावन से पतित बनती है? आत्मा को फिर पावन कैसे बनना है? बाबा हमें यह सब बातों का ज्ञान देकर, फिर सार में कहते है - मनमनाभव.

मनमनाभव का अर्थ है - स्वयं को आत्मा समझ परमात्मा-बाप को याद करों. बाबा हमें सारा ज्ञान इसलिए देते है कि हम आत्माये याद की यात्रा का पुरुषार्थ कर पतित से पावन बन जायें, जिससे इस धरती पर पावन दुनिया स्थापन करने में हम बाबा की मदद करते है और इसके बदले बाबा हमें पावन दुनिया का मालिक बनाते हैं.

आज बाबा ने हम बच्चों को तीव्र पुरुषार्थ करने की एक पाईन्ट सुनाते हुए कहा की परचिंतन-परदर्शन में अपना अमूल्य समय वेस्ट न करके स्वचिंतन-स्वदर्शन में रहकर स्व-उन्नति के मंथन में रहो. अपनी अवस्था अन्तरमुखी बनावो.

बाबा ने फिरसे आज याद की यात्रा पर जोर देते हुए कहा, अगर याद नहीं करेंगे तो बहुत छोटा पद पा लेंगे. इतना ऊँच पद पा नहीं सकेंगे इसलिए कहा जाता है अटेन्शन. आज की मुरली से बाबा ने जो भी आत्मा और परमात्मा के बारे में महावाक्य कहे है उसे हम अपनी आत्मिक स्थिति बनाकर बाबा की याद में रहकर पढ़ेंगे तो हमारी आत्मा मनमनाभव के मन्त्र की धारणा में पक्की होती जायेगी.

- बाबा कहते है, मुल बात है याद की. याद की यात्रा से ही सतोप्रधान बनना है और सतोप्रधान बन वापस घर जाना हैं.

- बाप को याद करने की विधि है - मैं आत्मा हूँ. शिवबाबा को याद करता हूँ.

- आत्मा को ही यह जो नॉलेज मिलती है, उनको ही ज्ञान का तीसरा नेत्र कहा जाता हैं. आत्मा को ही सुख-दुख होता है शरीर के द्वारा. आत्मा ही सतयुग में देवी-देवता बनती हैं फिर कलियुग में बैरिस्टर-डोकटर आदि बनती हैं.

- बाबा कहते है - हे आत्मा, देह सहित देह के सर्व सम्बन्ध छोडो और मुझे याद करो, मेरे पास ही तुम्हें आना हैं.

- बाबा कहते है - हे आत्मा, तुम्हारा घर भी ऊपर हैं. लेकिन वहॉ कोई पतित आत्मा जा न सके. अब पावन बनने के लिए तुम्हें बुद्धि का योग बाप से लगाना हैं.

- बाबा कहते है - बस, तुम मुझे याद करो. तुम्हें मुझ से वर्सा लेना हैं, और बातों में नहीं जाना हैं. इसलिए बाबा घड़ी-घड़ी कहते है अटेन्सन.

- बाबा कहते है - यह पक्का याद रखो. हमारा बाबा, बाबा भी है, टीचर भी है और सतगुरु भी है.

- बाबा कहते है - भगवानुवाच - मैं तुमको राजयोग सिखाता हूँ. और कोई मनुष्य ऐसे कह न सके.

ॐ शांति.